लोक संस्कृति के विविध पक्ष

डॉ. पवन सचदेवा
डॉ. राम रतन प्रसाद
डॉ. अंजली कायस्था

लोक संस्कृति के विविध पक्ष

सम्पादक
डॉ. पवन सचदेवा
डॉ. राम रतन प्रसाद
डॉ. अंजली कायस्था

स्वाक्षर

स्वाक्षर प्रकाशन

नई दिल्ली-110045

स्वाक्षर प्रकाशन दिल्ली, कटिहार

प्रकाशित लेख में व्यक्त विचारों से संपादक एवं प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं।

लोक संस्कृति के विविध पक्ष

© सम्पादक

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलैक्ट्रॉनिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकॉपी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनर्प्रकाशन अथवा पुनर्मुद्रण, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

आईएसबीएन : 978-93-86007-89-6

प्रकाशक : **स्वाक्षर प्रकाशन**
103, मनोकामना भवन, गली न-2, कैलाशपुरी
पालम, नई दिल्ली-110045 (भारत)
दूरभाष - 08826123590, 8750675177
ई-मेल : vaadsamvaad@gmail.com

शाखा कार्यालय : **स्वाक्षर प्रकाशक एवं वितरक**
न्यू ऑफिसर कॉलोनी
बुद्धचक, बरमसिया (शिवलोचन मंदिर के निकट)
जिला-कटिहार, बिहार-854105

मूल्य : 875/-
प्रथम संस्करण : 2021
शब्दांकन : स्वाक्षर ग्राफिक्स
मुद्रक : एस. सी. स्कैन, नई दिल्ली-110002

LOK SANSKRITI KE VIVIDH PAKSH
BY
Dr. Pawan sachdeva/ Dr. Ram Ratan Prasad/ Dr. Anjali Kayastha

अनुक्रम

संपादकीय

1. *ब्रज-वृंदावन की रंगीली उत्सव छटा* 9
   – डॉ. पवन सचदेवा
2. *हिमाचल के लोक गीत* 20
   – डॉ. अंजली कायस्था
3. *हरियाणा के लोकगीत : विवाह* 43
   – डॉ. नीरू
4. *लोकगीतों की सांस्कृतिक अस्मिता* 59
   – डॉ. कुसुम
5. *हरियाणा के पारंपरिक गीत* 70
   – डॉ. अनिता देवी
6. *गढ़वाल की लोककला के कतिपय आयाम* 84
   – वीरेन्द्र वर्त्वाल
7. *लोक संस्कृति के विविध पक्ष* 92
   – डॉ. बृजेश कुमार
8. *भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना* 103
   – डॉ. मनोज सतीजा
9. *हिमालय की ओर से एक नगर* 108
   – भगत पिथौमान
10. *लोकगीतों में स्त्री* 113
    – मुन्नी चौधरी
11. *पंजाबी में लोकगीत* 158
    – डॉ. संगीता थापर

12. पंजाबी में लोकनाट्य परम्परा 173
– डॉ. पृथ्वीराज थापर
13. गढ़वाली लोक-साहित्य 181
– डॉ. शशिबाला
14. लोक में नायक 186
– डॉ. प्रिया शर्मा
15. बिहार की लोक संस्कृति 195
– डॉ. रिंकू
16. पंजाबी लोक साहित्य 200
– डॉ. इन्दु दत्ता
17. सांस्कृतिक समृद्धि में अपना देश और मैला आँचल 208
– डॉ. राम रतन प्रसाद
18. लोक साहित्य / लोक संस्कृति 215
– डॉ. लहरी राम मीणा

लोक में नानक

– डॉ. प्रिया शर्मा,

'लोक' शब्द अत्यंत व्यापक और सम है, यह ब्रह्म की ही तरह अनंत अक्षर और असीम है, जीवन का प्रतीक और जन का पर्याय है। 'लोक' की सीमा केवल ग्राम या साधारण जनता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि समस्त चराचर मात्र में 'लोक' की समीचीन अलंकृति ही परम उपादेय और मांगलिक है। 'लोक' मनुष्य के हज़ारों विश्वासों, रीतियों, रिवाज़ों, रूढ़ियों, व्यवहारों, परंपराओं और संकल्पों से बनता है। लोक अनंत है, असीम है। लोक धरती से आसमान तक फैला है। जहां–जहां तक मनुष्य की बुद्धि और कल्पना पहुंचती है, वहां–वहां तक लोक की सीमा मानी जा सकती है। सृष्टि की उत्पत्ति से लगाकर प्रलय तक लोक रहेगा। जब तक मनुष्य रहेगा, तब तक लोक रहेगा। 'लोक' की व्याख्या बहुत विशद है, वह सदैव चिरंतन है। 'लोक' काल का अनुगामी है। काल निरंतर है, नित्य है, लोक भी निरंतर और नित्य है। आदमी की मृत्यु के पूर्व और पश्चात, काल की तरह लोक भी विद्यमान है। काल की गणना संभव है, लोक की गणना नहीं हो सकती लेकिन वह सर्वत्र होता है। काल को खंडों में विभक्त किया जा सकता है, लेकिन लोक को विभाजित करना संभव नहीं। लोक की शक्ति अपार है।[1] लोक शक्ति साहित्य में वेदों से लगाकर उपनिषद्, आरण्यक, पुराण, तांत्रिकी से होते हुए संस्कृत, अपभ्रंश वाङ्मय में पूरी ताकत के साथ अभिव्यक्त हुई। गुप्त, राजपूत और भक्तिकाल के भारतीय समाज की कला साहित्य संस्कृति में लोक शक्ति संपूर्ण ओजस्विता के साथ प्रकट हुई। मुगलकाल में लोक शक्ति शिवाजी,